क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल, देहरादून अंक 2 : अक्टूबर 2021

ऐ पंछी, अपने पंख फैला, आसमान बहुत ऊँचा है|
ऊँचाई से न घबरा, तेरे हौसलों के सामने फिर भी नीचा है|
बादलों से मत डर, यह तो बस रास्ते के काँटे हैं|
काँटों को पार कर के, उड़ना मीलों आगे है|
इस आकाश की असीमता, तेरी चुनौती है|
पूरे जज़्बे से, पार करनी ये कसौटी है|
कितना भाग्यशाली है तू, स्वतंत्रता तेरा जन्मसिद्ध अधिकार है|
भेद-भाव की बेड़ियों से मुक्त है तू, तुझे किसका इंतज़ार है?
धैर्य रख, न उठा वक्त की काबिलियत पर सवाल,
विश्वास रख खुद पर और बन एक मिसाल,
किस नायक का आज तक, पथ रहा है समतल,
तूफ़ान भरे गगन का, तू ही नायक है, तू ही नायक है।

साभार- देविका अग्रवाल (कक्षा 11),
प्रदीपिका गुप्ता (कक्षा 9)

संपादिका की कलम से

बचपन में दादी माँ से एक कहानी सुनी थी| उन्होंने बताया था कि देवता और दानव दोनों ही ब्रह्मा जी की संतान थीं| दानव एक बार ब्रह्मा जी के पास गए और उन पर दानवों के साथ सौतेला व्यवहार करने का आरोप लगाया| ब्रह्मा जी ने हँसते हुए कहा कि उन्हें सबसे प्रेम है और कल का भोजन सब साथ में करेंगे| दानव ख़ुशी-ख़ुशी लौट गए| नियत समय पर सभी पहुँच गए| ब्रह्मा जी ने अत्यंत स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था करवाई हुई थी| जैसे ही सभी भोजन करने के लिए बैठे, ब्रह्मा जी ने कहा कि कोई भी खाना खाने के लिए अपने हाथों का प्रयोग नहीं करेगा| दानव दुखी हो गए और जानवरों की तरह एक दूसरे के साथ लड़ते हुए थाली में मुँह लगाकर भोजन करने लगे| भोजन थाली तथा मुँह में कम था, बाहर ज़्यादा| दूसरी तरफ शांत माहौल था, देवता भोजन कर रहे थे और स्वादिष्ट भोजन का आनंद ले रहे थे| मैंने दादी से उत्सुक होकर पूछा कि देवताओं ने भोजन कैसे किया? दादी ने कहा कि अपने हाथों से सामने बैठे देवता को खाना खिलाकर| सबने एक-दूसरे को खाना खिलाया और इस प्रकार सभी को आनंद भी आया और प्रेम और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण भी बना रहा| यह कहानी अनायास ही याद नहीं आई, अफ़गानिस्तान की दर्दनाक खबरे पढ़ रही थी और मन सोच रहा था कि कितना अच्छा होता यदि आज हम सब भी देवताओं की तरह अपने से पहले दूसरे की भलाई के विषय में सोचते |अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को पीछे धकियाते हुए मानवता की राह पर बढ़ते जाते और इस पृथ्वी को स्वर्ग बनाते| काश! ऐसा होता कि हम सब यह प्रण लेते कि हमारी वजह से लोगों के चेहरों पर मुस्कान आए, आँखों में आँसू नहीं|

मैं यह अंक अफ़गानिस्तान की जनता की सलामती के लिए समर्पित करना चाहूँगी कि जल्द ही वे अपनी सामान्य दिनचर्या में लौटें और आगे बढ़ें|

आशा करती हूँ कि 'क्षितिज 2021' का यह दूसरा अंक भी आपको पसंद आएगा और हमेशा की तरह आपका प्रेम इसे प्राप्त होगा।
धन्यवाद।

-अग्रीमा चौधरी

इस अंक में आगे है:

पृष्ठ 1: आवरण पृष्ठ

पृष्ठ 2: संपादिका की कलम से

पृष्ठ 3: घूमता आईना + क्यों बेसहारा हम हैं?

पृष्ठ 4: फाउंडर्स की फुलझड़ी + अविनाश ध्यानी से साक्षात्कार

पृष्ठ 5: शशशशश .....डरना मना है

पृष्ठ 6: नन्हीं कलम से

पृष्ठ 7: करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान . . .

पृष्ठ 8: उम्मीद का पन्ना पलटो + सुखद सपना

पृष्ठ 9: यादों के पन्ने से

पृष्ठ 10: हमारे सीनियर्स + ऑनलाइन क्लासेस + हार का खौफ़

पृष्ठ 11: घरेलू विज्ञापनों में स्त्री-विमर्श

पृष्ठ 12: मास्क आत्मकथा

पृष्ठ 13: वैल्हम पहेली + संपादकीय मंडल

घूमता आईना

हम 21वीं शताब्दी में जी रहे हैं, चाँद, तारे और विभिन्न ग्रहों पर अपनी दुनिया बसाने की सोच रहे हैं| मनुष्य भी कितना प्रगतिशील है न? अपने रचे सभी प्रशस्ति स्तंभों से और आगे बढ़ने की होड़ में लगातार, बेतहाशा भागा चला जा रहा है| अमानवीयता, नृशंसता तथा क्रूरता में भी तो इसे अव्वल ही आना है|

अफ़गानिस्तान से आती ख़बरें मन को परेशान कर देती है| छोटी-छोटी बच्चियों के अस्तित्व पर मंडराता तालिबानी आतंक गहराता जा रहा है| शिक्षा के लिए रोती-बिलखती लड़कियों पर सख्ती की जा रही है| उनके लिए घर के बाहर आना-जाना प्रतिबंधित है| किसी बाहरी व्यक्ति से बात करना गुनाह है| अपनी राय रखना या गलत बात का विरोध किया जाना उनके समाज के पुरुषत्व को चुनौती देना है|

हैरान हूँ! इनके लिए लोगों की संवेदनाएँ केवल दुआओं तक सीमित क्यों हैं? क्यों मानवाधिकार आयोग तथा विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों की दृढ़ इच्छाशक्ति में जंग लग गया है? क्यों तथाकथित दार्शनिकों की मंडलियों में सन्नाटा पसरा हुआ है? निशब्द हूँ मैं...| समझ नहीं आता कि नियम मनुष्यों के लिए बनाए जाते हैं या नियमों के चक्रव्यूह में मनुष्य को फँसाने के लिए इनका निर्माण किया जाता है|

हम भूल रहे हैं हम इस सृष्टि के रचनाकार नहीं अपितु रचनाकार की अनुपम कृति है| हमें उसी उत्कृष्टता के भाव को मन में संजोकर ज्ञान तथा मानवता का दीप जलाकर मैत्री, समता तथा प्रेम के पथ पर अग्रसर होने की आवश्यकता है| हम सबको मिलकर इस पाश्विक तालिबानी सोच को दरकिनार करते हुए अनगिनत अफ़गानिस्तानियों की ओर मदद का हाथ बढ़ाना चाहिए ताकि जिस सुबह का वे इंतज़ार कर रहे हैं, वह सुबह उनकी जल्दी आए|

-देविका अग्रवाल
(कक्षा 11)

क्यों बेसहारा हम हैं?

धरती माँ पर अधिकार सभी का सम है,
फिर क्यों कुछ के हिस्से में खुशियाँ कम हैं,
फिर क्यों कुछ की आँखें नम हैं?
और क्यों अभिशप्त बेसहारा हम हैं?

किस मिट्टी में पाएँ अपनापन?
कहाँ खेले बच्चों का बचपन?
हम मान रहित, पहचान रहित
चाहा नहीं कभी किसी का अहित ...

मंडराता रहता हर दम, डर का साया
क्यों फैलीं रहती दुख की छाया
बेबस बंजारों सा जीवन लाचार
सह रहे प्रतिपल अत्याचार ...

क्यों नहीं होती, हमें देख
मानवता शर्मसार, मानवता शर्मसार।

- श्रीमती कुसुम डन्डोना
(पैस्टोरल हेड)

फाउंडर्स की फुलझड़ी

‘नन ऑन द रन’ फिल्म की शूटिंग का था त्योहार,
‘श्रीमती सिधवानी’ डाल रही थीं मुझ पर नज़र बार-बार।
कैसे कर सकती थी मैं इंकार
फिल्म में मुझे मिल रहा था किरदार।
२० अक्टूबर २०२१ , दिन था बुधवार,
बड़ी ही अनोखी अदा से होकर आई मैं तैयार।
और खड़ी हो गई ‘डब्लू. जी. एस.’ के मुख्य द्वार
‘ध्यानीजी’ से मिलने को थी मैं बेकरार
देख मेरा रूप ‘मिस तनुषी’ भी हो गई बेहाल,
मुझे देख सोच रहे थे मेरे सरकार,
मुझे भी हीरो बनने का मौका मिलता एक बार।
ये तो बन गई कटरीना कैफ
काश, मैं भी बन जाता सैफ
अरे भाई , न हूँ मैं करीना और न कटरीना
मैं हूँ ‘आशुतोष सर’ की लाल रंग की कार
जिसकी थी ‘नन ऑन द रन’ फिल्म के
डायरेक्टरजी को एक सीन में लेने की दरकार
मुझे कार से टैक्सी बनाने का
गौरव प्रदान करने वाले थे 'श्री मालाकार'!

-श्रीमती कुसुम डन्डोना
(पैस्टोरल हेड)

अविनाश ध्यानी

श्री अविनाश ध्यानी 2016 से बॉलीवुड में अभिनेता, निर्देशक, मॉडल तथा लेखक के रूप में सक्रिय नज़र आ रहे हैं| आप उत्तराखंड, देहरादून के डी.ए.वी कॉलेज से स्नातक हैं| अभिनय के आपका प्रतिप्रेम बचपन से ही रहा| 'फ्रेडरिक' फिल्म से इन्होंने अभिनय जगत तथा '72 आवर्स-मार्टर हू नेवर डाईड', 'सुमेरु' तथा 'सौम्या गणेश' से इन्होंने अभिनय के साथ-साथ निर्देशन की कमान भी संभाल ली| वैल्हमाइट्स के साथ 'नन ऑन द रन' फिल्म के निर्देशन के दौरान हमें उनके साथ साक्षात्कार करने का मौका मिला| नीचे दिए गए पर लिंक पर उनके साथ 'क्षितिज' का साक्षात्कार मौजूद है|

https://drive.google.com/file/d/1OlEnYcQX_5Q7vtB4O5lAD2Vp2lXPhOrS/view?usp=sharing

शशशशश .....डरना मना है

शाम के पाँच बज रहे थे और सोनाली ने अपना गृहकार्य ख़त्म कर किताब नीचे मेज़ पर रखी। “माँ क्या मैं कुछ देर ताज़ी हवा के लिए पार्क जा सकती हूँ?” माँ की इजाज़त मिलने के बाद सोनाली ने अपनी व्हीलचेयर के पहिए खिसकाए और पार्क की ओर चल दी। पार्क पहुँचते ही वह रोज़ की तरह कोने में जाकर शांति से बैठी रही| उसका कोई मित्र न था किंतु उसके माता-पिता ने उसे कभी भी मित्रों की कमी महसूस होने न दी। उसने कुछ देर के लिए अपनी आँखे बंद की और एक लंबी साँस ली। जब उसने अपनी आँखें खोली तो उसकी नज़र पार्क के दूसरे कोने में बैठी एक लड़की पर पड़ी जोकि अकेली और उदास लग रही थी| सोनाली उसके पास गई और उसे अपना परिचय दिया| सोनाली को देख वह लड़की मुस्कुराने लगी और कुछ ही क्षणों में दोनों की दोस्ती हो गई| सोनाली की नई दोस्त का नाम चीनू था| सोनाली बहुत खुश थी क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी विकलांगता का उपहास नहीं उड़ाया था|

मंगलवार की शाम सोनाली, चीनू से मिलने पार्क गई| कई घंटे इंतज़ार के बाद भी चीनू पार्क न आई| सोनाली बेसब्र होकर चीनू के घर उसे बुलाने चली गई|। घंटी की आवाज़ सुनकर उसकी माँ बाहर आई तो सोनाली ने उनसे पूछा, “आंटी चीनू आज पार्क में खेलने क्यों नहीं आई? मैं उसकी दोस्त सोनाली हूँ और हम प्रतिदिन पार्क में मिलते हैं।” चीनू का नाम सुनते ही उनकी आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी, क्योंकि चीनू उनकी एकलौती पुत्री थी जिसकी मृत्यु दो वर्ष पूर्व एक सड़क दुर्घटना में हो गई थी। जब सोनाली इस बात से अवगत हुई तो उसके पाँव तले ज़मीन खिसक गई। वह कैसे यह मान ले कि जिस व्यक्ति को वह अपना प्रिय मित्र समझती है, उसकी वास्तव में मृत्यु हो चुकी थी। सोनाली का दिमाग घूमने लगा और उसके मन में कई सवाल उत्पन्न हो रहे थे। रात हो चुकी थी, और वह अचंभित सी अपने घर की ओर बढ़ने लगी। वह अपने घर पहुँच ही गई थी जब उसने दूर से देखा कि उसके घर के दरवाज़े के आगे चीनू खड़ी होकर उसका इंतज़ार कर रही थी| उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और अपने 'व्हीलचेयर' के पहिए मोड़ वह तेज़ी से दूसरी तरफ जाने लगी। वह अपने घर पहुँच ही गयी थी कि एक बार फिर अचानक से चीनू उसके सामने आ खड़ी हुई| सोनाली का पहिए पर से हाथ फिसला, और वह अपना संतुलन खो बैठने के कारण धड़ाम से ज़मीन पर गिरकर बेहोश हो गई|

जब सोनाली ने अपनी आँखें खोली, तो वह अपने बिस्तर पर लेटी हुई थी और उसकी माँ उसकी बग़ल में बैठ कर उसकी पट्टी कर रही थी। सोनाली को होश में आया देख उन्होंने उसे गले से लगा लिया। “अगली बार से तुम अकेली बाहर कभी नहीं जाओगी।” सोनाली के सिर में अभी भी दर्द हो रहा था और उसे कुछ भी साफ़ याद नहीं आ रहा था। जब सोनाली ने अपनी माँ से पूछा कि वह घर में कैसे आई तो उन्होंने कहा कि मैं खाना बना रही थी कि तभी कोई बार-बार घंटी बजाने लगा। मैं जब देखने गई कि दरवाज़े पर कौन है, तो मैंने केवल तुम्हें ज़मीन पर बेहोश पाया। मैं बहुत डर गई थी और तुम्हारे पिताजी को बुलाकर हम तुरंत तुम्हें अंदर ले आए| यह सुनकर सोनाली को सब याद आ गया। उसकी माँ उसके लिए दवाई लाने कमरे से बाहर चली गई, तभी उसकी नज़र पर्दे के पीछे एक परछाई पर पड़ी। जब उसने देखने की कोशिश की तो एक परिचित आवाज़ सुनकर उसके रौंगटे खड़े हो गए। “तुम मेरी सच्चाई को हमारी मैत्री के बीच नहीं आने दोगी ना?”

-गुन गुप्ता
(कक्षा 10)

नन्हीं कलम से

हाय! यह परीक्षा

साल में दो बार यह आती है
हमें बड़ा सताती है
हर दिन हमें रुलाती है
माँ-बाप से डाँट भी खिलवाती है
हम बच्चों का 'बी.पी' भी बढ़ाती है
पता नहीं क्यों? हर साल यह परीक्षा वापस आ जाती है|
हर साल यह हमारे पिटने का मौसम भी बनाती है
कई बार शाबाशी भी दिलवाती है
जीवन में ईमानदारी और बेईमानी करना भी सिखाती है
भय में जीना सिखाती है
पता नहीं क्यों? हर साल यह परीक्षा वापस आ जाती है|
इस बार मैंने भी ठान लिया
परीक्षा से नहीं डरूँगी
उससे दो-दो हाथ करूँगी
परीक्षा से दो दिन पहले नहीं
पूरे साल पढ़ूंगी
और फिर जीवन में कामयाब बनूँगी|

-आद्या
(कक्षा 6)

मेरे बाबा

बाबा हमारे, प्यारे-प्यारे
बाबा हमारे, न्यारे-न्यारे
दिन-प्रतिदिन मैं याद करूँ,
दिल के गहरे कोने से
जब हँसती, चाँदनी रात
तब घेर लेती मुझे आपकी याद
जबसे तारा बन गए हो,
आपके आने का करूँ इंतज़ार
आपकी सिखाई हर बात,
हमें दिखाती नित-नूतन राह
अब ईश्वर से विनती है बारंबार
देना उन्हें शान्ति का भण्डार
क्या कहूँ अब शब्द नहीं
आपकी लाडली के पास
हे परमपिता! आर्या की पाती
पहुँचा देना उनके पास|

-आर्य शर्मा
(कक्षा 6)

मेरा बगीचा

घर के बगीचे में
मैंने अनेक पौधे लगाए थे
हरा-भरा हो गया था
उद्यान में रौनक आई थी
रंग-बिरंगा, प्यारा-प्यारा
इंद्र का बगीचा लगता है
रंग-बिरंगी चिड़िया आकर
सबका मन बहलाती है
मीठे-मीठे फल और फूल
सबके मन को हर्षाते हैं|
छोटी-बड़ी तितलियों के पीछे भाग
मैं शरीर को स्वस्थ बनाती हूँ|

-नित्या निरंजन राठी
(कक्षा 6)

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान . . .

'डिजिटल' युग की छात्राएँ कंबल ओढ़े, 'ए॰सी॰' के नीचे बैठे, 'नाइट सूट' में विद्यालय जाना तो कुछ साल पहले हर विद्यार्थी का सपना रहा होगा परंतु अब यह हमारी रोज़ की दिनचर्या बन चुकी है। कोरोना ने हमें एक 'डिजिटल' युग में धकेल दिया है। हम इसके लिए तैयार नहीं थे, लेकिन हमने इस बदलाव को स्वीकार कर लिया है। हम अब 'माइक्रोसॉफ्ट टीम्स' की रग-रग से वाकिफ़ हो गए हैं। प्रतिदिन हमें 'टीम्ज़' के 'सॉफ़्ट्वेयर' में भी नए बदलाव देखने को मिलते हैं केवल हमारी ज़िंदगी में ही कोई नए बदलाव नहीं आते। एक साधारण सा दिखने वाला डिब्बा, 'लैपटॉप' अन्तर्यामी बाबा बन चुका है।

सुबह-सुबह दाँत बिना माँजे, उलझे बालों के संग, पशुवत अवस्था में विद्यार्थी 'लैपटॉप' खोल अपने सिंहासन पर बैठ जाते हैं। जैसे ही अध्यापक 'वीडियो' खोलने का आदेश देते हैं, शेर जैसा शिष्य भी चूहा बन जाता है और प्रशंसनीय तेज़ी से बाल बनाकर, कपड़े बदलकर अपने सिंहासन पर आरूढ़ हो जाता है। एक ही भय हर बच्चे को सताता है, कि कहीं उनका 'वीडियो' और 'माइक' गलती से खुला न रह जाए| इन 'फीचर्स' ने हमें पिछले दो सालों में हँसी के अनगिनत पल दिए हैं| कभी कोई 'माइक' खुला छोड़कर गुनगुनाने लगता है, तो कोई गलती से पूरी कक्षा के सामने मसालेदार बातों का खुलासा कर देता है| कभी कोई अपनी छोटी बहन या भाई पर चिल्ला रहा होता है तो कभी किसी के घर में 'कूकर' की सीटी की आवाज़ें आ रही होती हैं| कुछ ऐसे रोमांचक किस्से भी हुए हैं जब विद्यार्थियों का 'वीडियो' खुला रह गया, और वे 'फ़ेस- मास्क' लगाकर 'सेल्फियाँ' लेते हुए पाए गए|

इस महामारी से पहले अध्यापिकाएँ, विद्यार्थियों को कक्षा में बात करने से मना किया करती थी पर अब अध्यापिकाओं को उन्हें न बोलने के लिए डाँटना पड़ता हैं। एक बच्चे का 'कैमरा' खोल लेना सभी को बहुत खुशी देता है। इतने समय बाद दोस्तों को 'स्क्रीन' पर देख एक उत्साह और अपनापन महसूस होता है। अब तो घर पर रहकर फ़िल्में देखने के शौकीन भी परेशान होकर कहते हैं कि वह अपने दोस्तों के साथ नाच-गाना एवं मस्ती करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं। 'ज़ूम' पर रात में मीलों दूर बैठे मित्रों से बात करके उनमें दम आता है।

अब हमें बस वैल्हम लौटकर अपनी ज़िंदगी दोस्तों के साथ खुलकर जीने का इंतज़ार है।

-अवानी जिंदल एवं हिमांशी गुप्ता
(कक्षा 11)

उम्मीद का पन्ना पलटो...

हर तरफ़ स्याह धुआँ है, रुदन है- क्रंदन है,
कँटीली झाड़ियाँ हैं, अजीब-सा असंतोष है,
असुरक्षा की भावना है फैली हुई,
युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को दोष दे रही है,
और पुरानी पीढ़ी युवाओं से नाउम्मीद है।

आख़िर क्या यह हालातों का दोष है?
नहीं, उम्मीद की मशाल लेकर निकलें तो,
उगता हुआ सूरज अवश्य मिलेगा,
रौशन जहान ज़रूर मिलेगा,
उम्मीद का पन्ना पलटना होगा।

बदलाव हो ना हो, कोशिश का मंज़र लाना होगा,
मन से की गई कोशिशें मील का पत्थर अवश्य बनेंगी,
ऐसा क्या है जो सम्भाला नहीं जा सकता?
क्यों हार मान ली जाए?
क्यों मंज़िल से पहले थक कर बैठ जाएँ?
क्यों हम खुद पर यक़ीन खोते जा रहे हैं?

कदम आगे तो बढ़ाओ, उम्मीद तो खोजो,
अगर 'ऐसा' बेहतर नहीं है तो 'वैसा' करके दिखाओ।
खुद पर भरोसा करके बेफ़िक्र हो जाएँ,
क्यों नाउम्मीदी की बात करते हैं?
क्यों ना समाधान की बात करें?

वक्त बदल रहा है, अगर परेशनियाँ नई हैं,
तो समाधान के तरीक़े भी नए ढूँढो।
खुद पर यकीन करो और उम्मीद का पन्ना पलटो।

-समायरा अग्रवाल
(कक्षा 10)

सुखद सपना

आ गई वह वार्षिक तनावपूर्ण घड़ी,
जिसमें बड़े आराम से कह दिया सबने,
"कर लो मेहनत कड़ी"|
कुछ इसने कहा, कुछ उसने कहा,
हमने केवल इतना सुना,
“बस इस साल, बन जाओ कोल्हू के बैल,”
"फिर आगे जीवन में मिलेगा चैन-ही-चैन|"

बिना मर्ज़ी के ही सही,
शामिल हो गए हम भी, इस विख्यात चूहा दौड़ में|
दूरदर्शन हो गया ईद का चाँद,
बोरियत ने कर दिया माथा जाम
दिन-रात करनी पड़ गयी मेहनत जटिल,
कॉफ़ी के बिन था जीना मुश्किल|

“हम नहीं देते प्रेशर!”, कहें ऐसे सत्यवचन,
कि गाँधी जी स्वयं आकर करें उनको नमन|
बहुतों ने ज्ञान बांचा, अंकों की निरर्थकता पर
पर जानते थे, न पढ़ना होगा अत्याचार खुद पर|

कुर्सी पर बैठे,
घंटों किताब को घूरने के बाद एकटक,
एक गिलहरी ही देखकर जाते हम भटक|
जो याद करने के लिए आँख बंद की,
सपने में काल्पनिक बातें दिखी|

परीक्षा के कागज़ बटें ही थे,
कि अचानक पड़ोसी चिल्ला उठे|
उड़ते-उड़ते सुन लिया, कि परीक्षा रद्द हो गई,
ऐसा लगा कि बंजर रेगिस्तान पर बरसात हो गई|
वर्षा हुई तो केवल फटे प्रश्न-पत्रों की,
शेर ने सुन लिया जब हिरण ने गुहार की|

नहीं देनी पड़ेगी परीक्षा,
सच हो गए वे ख्याल, जिनकी हमेशा की थी प्रतीक्षा|
शायद नज़र बुरी वाली लगी होगी,
जो सारी ख़ुशी, ख्यालों वाली दुनिया में छूट गई होगी,
कि यूँ ही झूमते-झूमते मेज़ पर धड़ाम से सिर लगा मेरा,
और सपना टूट गया मेरा|

-तृशा तिवारी
(कक्षा 10)

यादों के पन्ने से

बचपन के दिन भी, क्या खूब थे! 'सपना' ने सपने तो हमेशा देखे हैं पर बचपन में उन्हें पूरा करने में डर नहीं लगता था| अपने 'बचपन' को याद करके मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट और आँखों में चमक बढ़ जाती है| बचपन सुखद यादों का एक ऐसा सफर है, जहाँ जोश, उत्साह, उमंग, निश्छलता तथा खुशियों का मजमा लगा रहता है| आज भी माँ-बाबा, बहनों और दोस्तों के साथ गुज़ारे लम्हें आँखों के सामने से यूँ तेज़ी से गुज़र जाते हैं मानो हथेलियों से रेत सरक रही हो|

छोटी थी, तब बहुत शरारती हुआ करते थी| एक जगह टिककर बैठना, मेरे लिए और सबके लिए आफत को बुलाना था| बैडमिंटन खेलना, तायक्वांडो में दोस्तों को पछाड़ना, तेज़ी से साइकिल चलाना, पापा की 'यामाहा' लेकर कॉलेज जाना और सबके आकर्षण का केंद्र बनना कुछ ऐसी यादें हैं जिन्हें याद करके अब खूब हँसी आती है| मुझे लोगों के सामने अपनी बात रखने से कभी डर नहीं लगा। अपनी बिंदास अदायगी के कारण सब कॉलेज में मुझे ऐसे देखते थे जैसे मैं इस दुनिया की ही नहीं हूँ, पर मुझे उन्हें देखकर बड़ा मज़ा आता था।

पापा ने अपनी बेटियों को बहुत बहादुर बनाया है| आज वो मेरे साथ तो नहीं हैं पर उनकी कही हर सीख मुझे याद है। आज भी उनके साथ गुज़ारे खूबसूरत पलों को चुपके से जी लेती हूँ। मैं पढ़ाई में बहुत अच्छी रही हूँ, इसलिए बाबा की लाडली थी| बाबा भी मुँह से निकली बात को अलादीन के जिन्न की तरह पूरा करने में लग जाते थे| घर में नौकर-चाकरों की कमी नहीं थी फिर भी माँ 'अपना हाथ जगन्नाथ' वाली कहावत को चरितार्थ करने हेतु हमसे खूब काम करवाती थी| उस समय माँ का व्यवहार कई बार अखरता भी था परन्तु आज जब खुद को ज़मीन से जुड़ा हुआ पाती हूँ तो माँ के लिए सम्मान कई गुना बढ़ जाता है| काम तथा व्यक्ति को छोटा-बड़ा न समझने की शिक्षा-दीक्षा बचपन में ही मिली| जीवन में खूब मस्ती, धमाल, शरारतें की लेकिन नैतिकता और सिद्धांतों से कभी भी समझौता नहीं किया|

प्यारे बचपन तुमसे अगले जन्म में फिर मुलाकात होगी। बस तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ... अपनी एक गलती स्वीकार करना चाहती हूँ...जब छोटी थी तब बड़ी जल्दी बड़ा होना चाहती थी, आज जब तुम साथ नहीं हो तो एहसास होता है कि मैंने आखिर क्या खो दिया।
"कभी कंचे तो कभी लट्टू, बचपन में खिलौने कम नहीं थे, पर बचपन के दिन काफी कम थे।"

-सुश्री सपना शर्मा
(कंप्यूटर विभाग)

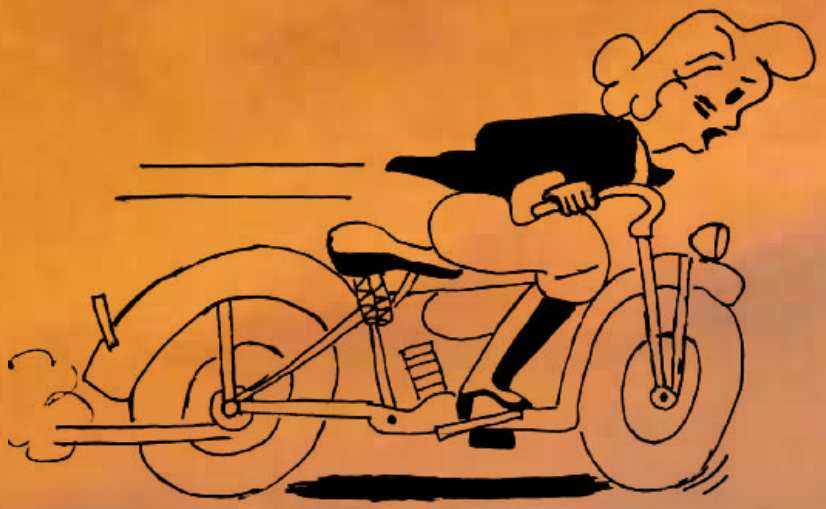

हमारे सीनियर्स

सबने कहा था, हमने सुना था...
और कुछ करो न करो पर सीनियर्स से भिड़ना मना था।
विद्यालय आए तो कुछ ने अपने पुराने अनुभव सुनाए,
कुछ सीनियर्स की बातें याद करके गुर्राए|
"हे यू!" कहकर सीनियर्स ने फेवर करवाए,
और तो और पास बुलाकर गाने भी गवाए।
कभी रुलाए, तो कभी हँसाए।
न जाने कैसे - कैसे दिन दिखाए...
मौसम बदले, रंग बदले,
सीनियर्स संग रिश्ते हुए गहरे
कभी अध्यपिकाओं से बचाएँ,
तो कभी परीक्षा के लिए खुद पढ़ाएँ|
प्रतियोगिताओं के लिए हौंसला बढ़ाए,
बीमार हुए तो इनफर्मरी में देखने आए|
कभी मन में छुपी बातें बताए|
सीनियर्स हमारे दोस्त और मार्गदर्शक की भूमिका में आए।
कब सीनियर्स जूनियर्स दोस्त बन जाए...
पता ही न चल पाए!

-आरुषि वोहरा
(कक्षा 9)

ऑनलाइन क्लासेस

ऑनलाइन क्लासेस बंद हो गईं,
ऐसा लगा जैसे जिंदगी ही थम गई।
सबसे पहले ख्याल आया कि चीटिंग कैसे करेंगे?
क्लास लेते समय एक-दूसरे से बातें कैसे करेंगे?
काम न करने पर 'वीक नेटवर्क' का बहाना ही ख़त्म हो गया|
कैमरा ऑफ करके सोने का मज़ा ही छिन गया|
दो साल बाद, जब कक्षा में बैठे,
तो किताब के सारे पन्ने नए लगने लगे।
कक्षा तथा अध्यापिका से बचने का
अब कौन-सा तरीका अपनाए? यह तो कोई ज्ञानी ही बताए|
गूगल बाबा की याद अत्यंत सताती है,
परीक्षा के वक्त फ़ोन की बड़ी याद आती है।
आखिरकार ऑनलाइन क्लासेस बन्द हो ही गई,
ऐसा लगा रहा है जैसे जिंदगी ही थम गई|

-अन्वी अग्रवाल
(कक्षा 11)

हार का खौफ़

कुछ शुरू करने से पहले ही
हार का खौफ ज़हन में आता है
किसी राह में चलने से पहले
राह के ख़त्म होने का ख्याल आता है
क्यों किसी मंज़िल की ओर निकलने से पहले
कदम मेरे लड़खड़ाते हैं?
मन की बात ज़ुबान पे आती नहीं कि
मेरे शब्द वापस लौट जाते हैं
सपने देखने से पहले ही
मेरी नींद क्यों खुल जाती है?
उड़ान भरने से पहले ही
क्यों मैं अपने पंख काट देती हूँ?
काश! मैं खुद को बोल सकती
"एक बार उड़के देख,
गिरने में भी मज़ा आएगा|"

-मनस्वी पंत
(कक्षा 11)

घरेलू विज्ञापनों में स्त्री-विमर्श

घरेलू रोजमर्रा की चीजों के विज्ञापनों की यदि बात की जाए तो बर्तन धोने, घर की साफ – सफाई, साज – सज्जा या बच्चों के पालन – पोषण से संबंधित उत्पादों के विज्ञापनों में हमें केवल स्त्रियों की भूमिका नज़र आती है| मसालों के विज्ञापनों में स्त्री को खाना पकाते और परोसते दिखाया जाता है तो वही दूसरी ओर पुरुष को खाने की तारीफ करते हुए| पुरुष काम करके आएगा और उसके कपड़े धोने का काम करेगी स्त्री| यदि बर्तन या 'टॉयलेट' चमकाने का विज्ञापन है तो पुरुष एक विक्रेता की भूमिका में नज़र आएगा| इसका क्या अर्थ है? कहीं न कहीं ऐसे विज्ञापनों से समाज के पुरुषप्रधान होने की ओर संकेत मिलता है| क्या हमारे समाज में आज भी पुरुष को घर के मुखिया और स्त्री को उसकी बंदिनी के रूप में देखा जाता है? क्या इन विज्ञापनों का यही अर्थ है कि घर की देखभाल और बच्चों का लालन–पालन केवल स्त्री की जिम्मेदारी है? समाज ने एक दायरा निश्चित कर दिया है और इसके अंतर्गत घर के सारे काम स्त्री को ही करने हैं, फिर स्थिति चाहे जो हो| चाहे वो शिक्षित हो, व्यवसायी हो, तब भी उसके लिए घरेलू कार्य अनिवार्यता के साथ जुड़े हैं| इसी मानसिकता को ध्यान में रखकर ऐसे विज्ञापन बनाए जाते हैं|

कोई भी स्त्री किसी पुरुष से कम काम नहीं करती बल्कि देखा जाय तो अधिक ही करती है| आज के समय में तो ज़्यादातर स्त्रियाँ घर के भी सारे काम करती हैं और धनोपार्जन भी करती हैं| तो फिर महिलाओं के व्यक्तित्व के केवल एक ही पहलू को क्यों उजागर किया जाता है, दूसरे को क्यों नहीं? आजकल कई पुरुष भी घरेलू कार्य करते हैं और बेझिझक करते हैं| एक तरफ पुरुष को गृहस्वामी कहते हैं तो वही गृहकार्यों की स्वामिनी केवल स्त्री को समझा जाता है जो बिलकुल विपरीत अवधारणा है|

जब हम इक्कीसवीं शताब्दी में सामाजिक परिवर्तन या समानता की बात करते हैं तो ऐसे मुद्दों पर वही संकीर्ण सोच क्यों रखते हैं? समुचित विकास के लिए यदि समानता हर क्षेत्र में आवश्यक है तो फिर लैंगिक समानता की अवहेलना क्यों? 'मीडिया', जिसे जनतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहा जाता है, वही से इस महत्त्वपूर्ण मुद्दे पर सकारात्मक बदलाव की अपेक्षा करना स्वाभाविक है| लैंगिक समानता जनतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक ही नहीं महत्त्वपूर्ण है| कुछ कार्यों को पुरुष के लिए हीन मानना और केवल महिलाओं की ही ज़िम्मेदारी मान लेना एक कुंठित विचारधारा का प्रतीक है| ऐसी सोच समाज के विकास को अवरुद्ध करती है| कार्यों का विभाजन लिंग के आधार पर नहीं बल्कि रूचि व निपुणता के आधार पर होना चाहिए|

अभी हाल ही में एक बहुप्रतिष्ठित 'चॉकलेट कंपनी' का एक नया विज्ञापन इस दिशा में निश्चय ही एक सकारात्मक कदम है| ऐसे विज्ञापनों से देश की आधी आबादी के प्रति समाज के दृष्टिकोण में अवश्य ही बदलाव दिखेगा जो समाज के स्वस्थ विकास हेतु आवश्यक है|

-श्रीमती अर्चता भट्ट
(हिंदी विभाग)

मास्क आत्मकथा

मित्रों आखिरकार मेरे अच्छे दिन आ ही गए| आँख झपकाकर कहीं भी देखोगे तो हर मनुष्य के चेहरे पर मैं ही नजर आऊँगा। पहले, दुकानों में पड़े-पड़े सालों बीत जाते थे और मैं व्यर्थ बैठा, धूल खाता रहता था परंतु अब मेरा भाग्य चमक रहा है। यह तो 'कोरोना वायरस' का कमाल है, जिसने मेरा भाग्य पलट दिया।

आप सब तो जानते ही हैं कि इस महामारी का संक्रमण नाक एवं मुँह से साँस लेने पर हो सकता है| अत: मैं वायरस और एक मनुष्य के बीच खड़ा होने वाला रक्षक हूँ और तो और मैं वातावरण में मौजूद 'सी.एफ.सी' (क्लोरोफ्लोरोकार्बन) और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी हानिकारक गैसों से भी बचाता हूँ जो मनुष्य के फेफड़ों को क्षति पहुँचाते हैं। आजकल मेरे परिवार में कई नए सदस्यों का आगमन हो रहा है| कुछ मास्क डिजाइनर कपड़ों के बने होते हैं और कुछ मामूली सूती कपड़े के|

हँसता हुआ नूरानी चेहरा आजकल भले ही छिपा रहता हो पर इसका यह अर्थ नहीं कि आप अपनी सुंदरता को कम महसूस करने लगें। भले ही मैंने होठों की मुस्कान को छिपा लिया हो लेकिन मुस्कुराना मैंने आँखों से सिखा भी तो दिया है। मैं धर्म निरपेक्ष हूँ, हिन्दू, मुस्लमान, सिख, ईसाई के बीच भेदभाव न करते हुए सब की रक्षा करता हूँ| सच कहता हूँ, मैं बिलकुल नहीं चाहता था कि मैं आपकी ज़िंदगी में इस तरह आऊँ, जब पूरे विश्व में अनगिनत लोगों की जानें जा रही हैं।

मेरा आपसे अनुरोध है कि मुझे ढंग से पहने एवं मुँह और नाक दोनों को पूरी तरह ढकें। किसी ने खूब कहा है-

"रहिमन घर से जब चलो, रखिओ मास्क लगाए।
ना जाने किस वेश में, मिलने कोरोना आए॥"

-यशस्वी गोयल
(कक्षा 10)

वैल्हम पहेली

(सभी पहेलियों का केंद्र वैल्हम की अध्यापिकाएँ हैं।)

1) बच्चों की बसती इनमें जान है, माँ की तरह रखती हम सब का ख्याल हैं,
करती खाने - पीने का इंतज़ाम हैं, बूझो इनका क्या नाम है|

2) हाथों में गिटार लेकर, लगते वह रॉकस्टार हैं,
म्यूजिक उनकी भाषा है, वही उनका आहार है।

3) छात्राओं के लिए तंदरुस्ती बनाए रखना जिनका, सबसे बड़ा काम है,
जो ऑनलाइन क्लॉसेस में भी बिस्तर से करवा लेती, हम सब से व्यायाम है|

4) हिंदी भाषा में बनाए मज़ेदार वह हर एक किस्सा,
हमारे संपादकीय मंडल का है वह हिस्सा,
अपने मीठे स्वर में करती प्रत्येक काम,
क्या बता सकते हैं आप उनका नाम ?

1) अनुपमा गुप्ता *2)* जोशुआ पॉल *3)* शेफाली वर्मा*(*खेल विभाग*)* *4)* अस्मिता

- श्रीना गुलाटी
(कक्षा 9)

संपादकीय मंडल

प्रभारी शिक्षिका:
श्रीमती अस्मिता

मुख्य संपादिका:
अग्रीमा चौधरी

विशेष आभार:
देविका अग्रवाल
नितिका चौधरी

चित्रकार:
ज़ीनिया सिंह
आयुर्धी अग्रवाल
वारुणी स्वरुप
आन्या पुनीत
वैष्णवी अग्रवाल